डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

5.1.4

(20) प्रश्न :→ प्रधान मंत्री के रूप मे डिजरैली पर मुल्यांकन करें।

उत्तर :→ इंगलैंड के संवैधानिक इतिहास मे प्रधान मंत्री डिजरैली का स्थान महत्वपूर्ण है। लेकिन इतिहास मे उनकी घरेलु निति का विशेष महत्व है। डिजरैली को प्रसिद्धी मिलने का एक मात्र कारण यह है कि उन्होने प्रांरभिक समय से ही मजदूरों के अधिकार के लिए सरकार से लड़ता रहा। और अन्त: उसे अपना अधिकार दिलाकर ही स्थिर हुआ। नतिजा यह हुआ कि मजदूर वर्ग के लोग उसे दिलो जान से चाहने लगे इतना ही नही बल्कि डिजरैली सब प्रयासों से मजदूर वर्गों के लोग मे संतुष्ट की लहड़ दौड़ पड़ी ऐसी स्थिति मे मजदूर दल के सब प्रयासो से डिजरैली आगे बढ़ता गया और वह इंगलैंड का शासक बन बैठा।

(1) लाइसेंसिंग ऐक्ट :— सबसे दुखद पहलु तो यह है कि जिस समय डिजरैली इंगलैण्ड का शासक बना था उस समय इंगलैंड की स्थिति काफी बतर थी। जिससे उन्हे हर समय निराश ही निराश आ रहा था। लेकिन फिर भी डिजरैली समय एवं परिस्थतियों से घबराने वाला व्यक्ति नही था। और उन्होंने बड़े धैर्य एवं सहनशीलता मजदुर वर्ग को एकत्रित कर के इंगलैंड को नव जीवन प्रधान किया यह डिजरैली की बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जायगी। ऐसी स्थिति मे 1873 ई० मे डिजरैली ने लाइसेंसिंग ऐक्ट पास करवा

कर न्याय व्यवस्था मे एक बहुत बड़ा परिवर्तन ला दिया। क्योंकि उस समय मे इंगलैंड की इतनी बदतर स्थिति हो गई थी कि ऐसी स्थिति मे न्याय व्यवस्था मे सुधार लाना बहुत आवश्यक सा हो गया था। सबसे दुखद पहलु तो यह है कि इंगलैंड के लोग दिन रात शराब के नशा मे डूबे रहते थे। और सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि वहाँ पुरुषो से अधिक महिला ही शराब पीती थी। नतिजा यह होता था कि सही काम करने वाले लोग भी डगमगा जाते थे ऐसी स्थिति मे डिजरेली ने सबसे पहले इस व्यवस्था पर प्रतिबंध लगाना उचित समझा और ऐसी ही स्थिति मे उन्होने लाइसेंसिंग ऐक्ट को पास कराकर शराब के खानों को नियंत्रित किया इसीलिए एक विद्वान ने कहा भी है कि

The lisensing Act fixed the closing time for London at 11.30 PM populeus places at 11.00 PM and country places at 10.00 PM

डिजराइली के इन कठोर कदम से वहाँ की व्यवस्था मे काफी बदलाव आ गया। यह डिजरेली की बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

(ii) ~~पब्लिक~~ पब्लिक हेल्थ ऐक्ट 1875 :→ अब इंगलैंड मे दुसरी समस्या मजदुरो को रहने की थी। जिसे दुर करना बहुत ही आवश्यक हो गया था लेकिन यह काम बहुत असान नही था फिर भी डिजरेली संकल्प प्रान व्यक्ति था उन्होंने इस काम को करने का निश्चय किया, सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि इसमे उन्हे सफलता

मिली उन्होंने इस क्रम मे भी 1875 ई० मे एक अधिनियम पारित कर मजदूरो और गरीबो को रहने के लिए हवादार गृहों का निर्माण कर दी। और इसे जल्दी तैयार करने के लिए स्थानीय संस्थाओं को भार सौंप दिया। इतना ही नही बल्कि पबलिक हेल्थ ऐक्ट को पासकरवा कर सारे देश के लोगो को स्वास्थ एवं सफाई के लिए उचित प्रबंध कर दिया।

(iii) Agriculture Of holding Act 1876
(ऐग्रिकल्चर ऑफ होल्डिंग एक्ट) :->

होल्डिंग ऐक्ट किसानो के हक के लिए था क्योंकि इसके द्वारा देहाती मामलो मे जितनी भी समस्या थी इन्ही ऐक्ट मे निर्मित था इस ऐक्ट के पारित होने से अब किसानों को ऐसा लगने लगा शायद अब ~~किसानो~~ मेरा भी शुभ दिन आने ~~वाला~~ वाला है। क्योंकि इस ऐक्ट के पहले व्यापारी लोग अपने जहाजो पर आवश्यकता से ज्यादे माल लादा करते थे। अधिक माल लादने से उसको अधिक लाभ हुआ करता था लेकिन लाभ के साथ उसकी सारी संप्रति डुब जाती थी ऐसी स्थिति मे डिजरैली ने 1876 ई० मर्चेन्ट सिपिंग ऐक्ट ~~पास~~ प्रभावित करवाया।

डिजरैली पामरस्टोन पद चिन्हो पर चलना चाहता था वैसे भी ग्लैडस्टोन शांति निति के कारण इंगलैंड की प्रतिष्ठा दिन प्रतिदिन समाप्त होती जाती थी। ऐसी स्थिति मे डिजरैली ग्लैडस्टोन पदस्टोन चिन्हो पर चलना पसंद नही किया सबसे दुखद पहलु तो यह है कि इंगलैंड

हर क्षेत्र में पीछे था जिसे डिजरैइली हर संभव प्रयास कर आगे करना चाहता था। वैसे भी वह साम्राजवादी था। उसने एक अपने एक भाषण में अपनी साम्राज्यवादी निति को स्पष्ट करते हुए कहा था कि हमारा कर्तव्य बिटेन को उस साम्राज्य को कायम करना है। जिसके फलस्वरूप बिटेन को युरोप के कांसिल अत्य अधिक महत्व है। 19वीं शताब्दी के सभी महान राजनैतिक में डिजरैली का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की खोई हुई परिस्थिति को सुदृढ़ किया इसी लिए तो बिश्माकी जैसे राजनैतिक भी उसे लोहा मानता था। इतना ही नही बल्कि बिसमार्क ने कहा था कि "डिजरैइली इंगलैंड है।" उसने रूस के घमण्ड को चकना चुर कर दिया और इंगलैंड की सीमा को सैपरस तक बढाया यह डिजरैइली की बहुत बडी उपलब्धि मानी जायगी।

जहाँ तक डिजरैइली के विदेश निति का सवाल है तो इस संबध्य में हम ऐसा कह सकते है कि डिजरैइली के विदेश निति दोहरी ही अधार स्तम्भ था। पहला बिटेन के साम्राज्यवादी हितो की रक्षा करना दूसरा युरोप की राजनैतिक में जरूरत मे हिसाब से हाथ बढना इनदोनो की रूस शक्ति काफी बढ़ गयी थी। इसीलिए तो उन्होंने पूर्वी युरोप पर चढाई करना शुरु कर दिया था। डिजराइली इस चीज को किसी भी स्थिति में बर्दास्त करने के काबिल नही था। ऐसी स्थिति में उन्होंने अपनी सारी शक्ति को समेट कर रूस के

विरोध मौक दिया। उसकी इन तैयारी को देखकर रूस के शासक घबरा गये और उन्होंने अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन मे बुलाने को तैयार हो गया। और इस सम्मेलन से डिजरैली को पूर्ण सफलता मिली। या हम ऐसा भी कह सकते है कि यह सफलता डिजरैली की उच्च कोटि की कुटनितिकता थी।

* आलोचना :→ बहुत से आलोचक डिजरैली की विदेशनिति की सफलता को छान भंग मानते है। उन आलोचको का कहना है कि ग्लैड स्टोन की विदेशनिति यदि आवश्यकता की थी, तो डिजरैली विदेशनिति सबा से राहत थी क्यो कि डिजरैली ने इंग्लैंड के हितो को सबसे ऊँचा स्थान दिया। अन्य देशो के खुल कर विरोध किया। इतना ही नही बल्कि विदेश निति के क्षेत्र मे वह रूस जैसे शक्ति राष्ट्रो को ना खुश कर दिया ऐसी स्थिति मे कुछ आलोचको का कहना है कि वास्तव मे उसकी विदेश निति छन्न भंगु थी। क्योंकि उसको मित्र के साथ अच्छा संबंध नही रहा। अतः हम यह कह सकते है कि डिजरैली की विदेश निति विफल साबित हुई।

इसप्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते है कि 19वी शताब्दी के सभी महान राजनैतिको मे डिजरैली का स्थान इंगलैंड के संवैधानिक इतिहास मे महत्वपूर्ण है। वह एक महान साम्राज्यवादी प्रधान मंत्री था तथा वे अपने शासन काल मे इंग्लैंड की किर्ति पताका को विदेशो तक फैलाना चाहता था

इतना ही नहीं उसकी सबसे बड़ा गुण यह था कि दिन दुखयों के कष्ट को वह बहुत करीब से सुनता था। और वह उसे दूर करने का हर संभव प्रयास करता था। अपने क्षमता और समर्थ के बदौलत से इंग्लैंड में व्यापारी क्षेत्रों का केन्द्र बना दिया। इतना ही नही बल्कि उसके समय में इंग्लैंड के हर क्षेत्र में सुधार हुआ इसीलिए तो उसे इंग्लैंड के महान प्रधानमंत्री के श्रेणी में आ जाता है। और वास्तव में वह महान था। दिन दुखयों की सेवा ही उसके जीवन का मात्र उद्देश्य था। और सबसे बड़ी बात यह है कि जिस भी व्यक्ति में दिन दुखयों के प्रति सेवा के प्रति भावना रहेगी। वह व्यक्ति कभी भी जिंदगी के किसी मोर पर आगे बढ़ने से रुक नही सकता। और इसका एक ज्वलंत उदाहरण इंगलैंड के प्रधानमंत्री डिजरेली है।

*